शान्ति शिक्षा एवं वर्तमान अध्यापक शिक्षा में निहितार्थ

सुषमा जोशी*

शान्ति शिक्षा कोई विचार या प्रणाली नहीं है और न ही इसका संबंध किसी प्रकार की कानूनी व्यवस्था से है, यह वह शिक्षा है, जो व्यक्ति को उसकी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया समझने के योग्य बनाती है। सामान्य शब्दों में शान्ति शिक्षा वह जीवन शैली है, जो शोषण रहित, हिंसा रहित न्यायप्रिय समाज की संरचना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा मनुष्य का मनुष्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करती है। शान्ति की अवधारणा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के उद्घोष के रूप में देखी जा सकती है। समस्त पृथ्वी ही एक परिवार है, यह वाक्य शान्ति की भावना के आदर्श को इंगित करता रहा है। प्रसिद्ध चिंतक एवं विचारक जे. कृष्णमूर्ति के भी विचार थे कि – 'यदि जीवन सुख से, विवेक से, सावधानी से तथा प्रेम से जीने के लिये बना है तो यह बहुत आवश्यक है कि हम अपने को समझें और यदि हम एक प्रबुद्ध समाज का निर्माण करना चाहते हैं, तो हमारे पास ऐसे शिक्षक होने चाहिए जिनको समन्वय की प्रक्रिया का अवबोध हो और जो उस अवबोध को बालक तक पहुँचाने में सक्षम हों।'

मानव शान्ति एवं जनकल्याण की भावना के विकास की आवश्यकता इतनी कभी भी महसूस नहीं की गई जितनी कि इस वैश्वीकरण के दौर में की जा रही है। आज संपूर्ण विश्व किसी-न-किसी प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहा है। चुनौतियों का स्वरूप चाहे जो भी हो इतना निश्चित है कि इनका मूल कारण है अशान्ति। द्रुतगामी आधुनिक औद्योगिक परिवर्तन एवं तकनीकी विकास के कारण आज का मानव अनेक प्रकार की पीड़ाओं, कुंठाओं एवं मानसिक अशान्ति से संत्रस्त है। विगत दो युद्धों के परिणामों ने स्पष्ट कर दिया था कि यदि इस प्रकार हिंसा, आतंकवाद, द्वेष, अशान्ति लोगों में कायम रहेगी तो इसमें कोई संशय नहीं कि इसी प्रकार के एक तीसरे युद्ध की विभीषिका समस्त प्राणी जगत का संहार कर देगी। इन्हीं मानव संवेदना रहित विनाशकारी प्रवृत्तियों के कारण विश्व तृतीय विश्व युद्ध को आमंत्रित कर रहा है। अतएव आज सर्वत्र अशान्ति के इस वातावरण में मानव सहिष्णुता, सद्भाव एवं शान्ति शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का इस संबंध में मानना था – 'विश्व एक साझेदारी है। यह एक मैत्रीपूर्ण

* *रीडर एवं विभागाध्यक्ष*, शिक्षक शिक्षा विभाग, वसन्त महिला महाविद्यालय, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन, राजघाट, वाराणसी

ब्रह्माण्ड है। हमने प्रेम करने के लिए जन्म लिया है न कि एक दूसरे को समाप्त करने के लिए।'

शान्ति शिक्षा का अर्थ

वास्तव में शान्ति शिक्षा कोई विचार या प्रणाली नहीं है, न ही इसका संबंध किसी कानूनी व्यवस्था से है, यह वह शिक्षा है, जो व्यक्ति को अपनी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया समझने के योग्य बनाती है। दूसरे शब्दों में शान्ति शिक्षा वह जीवन शैली है, जो शोषण रहित, हिंसा रहित तथा न्यायप्रिय समाज की संरचना करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है, एवं मनुष्य का मनुष्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करती है। प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं विचारक श्री जे. कृष्णमूर्ति जी का शान्ति के संबंध में यह वक्तव्य अत्यन्त सटीक प्रतीत होता है कि – *'शान्ति का समारम्भ तो स्वयं अपने अवबोध से होता है, इसके लिए संगठनों, सत्ताधारियों या सरकारों पर निर्भर करना, और अधिक एवं व्यापक द्वन्द्व को उत्पन्न करना है। यदि हम वर्तमान परिस्थितियों में परिवर्तन करना चाहते हैं तो हमें पहले अपने में परिवर्तन करना होगा।'*

हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति में भी प्रारंभ से ही शान्ति की अवधारणा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के उद्घोष के रूप में देखी जा सकती है। समस्त पृथ्वी ही एक परिवार है, यह वाक्य शान्ति की भावना के आदर्श को इंगित करता रहा है। वेदों की ऋचाओं में शान्ति एवं जनकल्याण की भावना के विकास पर ज़ोर दिया गया है। ऋग्वेद के मंत्र में स्पष्ट रूप से लिखित है –

शं नः सूर्य उरूचक्षा उदेतु।
शं नचतस्त्रः प्रदिशे भवन्तु।।

अर्थात् अत्यंत फैले हुए तेज़ से युक्त सूर्योदय हम सभी के लिए शान्तिदायक हो। चारों दिशाएं हमारे लिए शान्ति देने वाली हों। इसी प्रकार ऋग्वेद के मंत्रों में समस्त लोक की शान्ति की प्रार्थना भी की गई है।

''ऊँ द्यौः शान्ति अंतरिक्ष शान्ति पृथिवी शान्ति
रापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्ति, विश्वे देवाः शान्तिर्बह शान्तिः
सर्व शान्ति शान्ति रेव शान्तिः सा मा शान्ति रेधि
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्ति।।

अर्थात् द्युलोक, अन्तरिक्ष जगत, पृथ्वी सुख शान्ति देने वाली हों। जल, औषधियाँ तथा वनस्पतियाँ शान्ति दें। समस्त देव, ब्रह्म और सभी कुछ शान्तिप्रद हों। जो शान्ति विश्व में फैली हुई है, वह मुझे प्राप्त हो। मैं बराबर शान्ति का अनुभव करूँ।

वेदों में मंत्र रूप में वर्णित समस्त प्रार्थनाएँ विश्वबन्धुत्व की उदात्त भावनाओं से ही अनुप्राणित हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि हमारे प्राचीन ऋषियों, सन्तों एवं मनीषियों ने शान्ति और अहिंसा का प्रतिदान करने में कहीं भी चूक नहीं की। 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में महात्मा गांधी के सत्याग्रही विचारों ने एक बार फिर से लोगों को शान्ति और अहिंसा की ओर उन्मुख करने का प्रयास किया। उन्होंने 'बहुजनहित' एवं सर्वजनहित के द्वारा ही शान्ति शिक्षा को अंगीकृत एवं आत्मसात किया। इन्होंने हिंसा को शान्ति का मार्ग मानने से इन्कार किया और सत्याग्रह की वकालत की। उनका कहना था, भारत का अहिंसा का मार्ग अपनाने का कारण यह नहीं कि भारत कमज़ोर है अपितु भारत इस बात को पहचान ले कि वह शरीर नहीं, अमर आत्मा है,

जो हर एक की शारीरिक कमज़ोरी के ऊपर उठ सकती है। गांधी जी ने भारतीय संस्कृति के अहिंसामय पक्ष को पूरे विश्व के समक्ष पुनर्जीवित किया। महान शिक्षाविद् स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा का सार 'सर्वभूतहितेरता:' था अर्थात् सभी प्राणियों के कल्याण के लिए कार्यरत रहना। उनके अनुसार मनुष्य में पाशविक, मानवीय और दिव्य इन तीनों विशेषताओं का संयुक्तीकरण है। पाशविक प्रवृत्ति हिंसा को बढ़ावा देती है तथा मानवीय व दिव्य प्रवृत्ति शांति व विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास करती है। इसके लिए मनुष्य को स्वयं में निहित प्रवृत्तियों को पहले समझना होगा और इसमें शिक्षा ही जागरूकता में सम्बल हो सकती है।

प्रसिद्ध चिन्तक एवं विचारक जे. कृष्णमूर्ति जी के भी विचार थे कि – *''यदि जीवन सुख से, विवेक से, सावधानी से तथा प्रेम से जीने के लिए बना है, तो यह बहुत आवश्यक है कि हम अपने को समझें और यदि हम एक वास्तविक प्रबुद्ध समाज का निर्माण करना चाहते हैं तो हमारे पास ऐसे शिक्षक होने चाहिए जिनको समन्वय की प्रक्रिया का अवबोध हो और जो उस अवबोध को बालक तक पहुँचाने में सक्षम हों।''* उपरोक्त विचारों से स्पष्ट हो जाता है कि यदि हम शान्ति शिक्षा संबंधित विचारों को विकसित करना चाहते हैं तो आवश्यक है कि हम सर्वप्रथम अपने विचारों में परिवर्तन करें। अपने प्रतिदिन के जीवन में कार्य के प्रतिमानों, भावनाओं, विचारों के प्रति जागरूक हों। हम अपनी बौद्धिक उपलब्धियों पर अधिक ज़ोर न देकर आध्यात्मिक मूल्यों को जीवन में अपनाने का प्रयास करें। निसंदेह शान्ति स्थापित करने के लक्ष्य में शिक्षा महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती है। इसलिए आज इस बात पर प्राथमिकता देनी होगी कि शिक्षा द्वारा भगवान बुद्ध, नानक, कबीर, गांधी, मदर टेरसा आदि के विचारों से आने वाली पीढ़ी को अवगत कराया जाए।

शान्ति शिक्षा एक सकारात्मक दृष्टिकोण है, इस तथ्य को आज विश्व के सभी राष्ट्रों ने स्वीकार कर लिया है। द्वितीय विश्वयुद्ध के भयंकर परिणामों के पश्चात शान्ति शिक्षा की आवश्यकता को महत्वपूर्ण मानते हुए सन् 1945 में 43 राष्ट्रों ने मिलकर 'संयुक्त राष्ट्र संघ' की स्थापना की। संघ ने अपने आधारभूत सिद्धांतों को स्थापित करते हुए स्पष्ट रूप से कहा – *'चूँकि युद्ध का आरंभ मानव के मस्तिष्क से होता है इसलिए मनुष्य के दिमाग में शान्ति के प्रति आस्था उत्पन्न करना है... इसलिए मनुष्य की यह ज़िम्मेदारी है कि वह विभिन्न संस्कृतियों में समन्वय स्थापित करे व मनुष्य के दिमाग में न्याय व शान्ति के प्रति आस्था उत्पन्न करे ...'*

संयुक्त राष्ट्र संघ ने महात्मा गांधी की अहिंसा नीति को अपनाने पर बल दिया। यही कारण है कि संघ ने गांधी जी के जन्मदिवस को 'अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' के रूप में मनाने का संकल्प किया तथा सन् 2000 को शान्ति संस्कृति का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष तथा वर्ष 2001–2010 तक के दशक को शान्ति संस्कृति एवं विश्व के बच्चों के लिए अहिंसा का अंतर्राष्ट्रीय दशक मनाया जाना तय किया गया। समग्र विश्व में शान्ति बनाए रखने हेतु स्थापित यूनेस्को (UNESCO) का भी प्रमुख सिद्धांत था मानव जाति को विश्व समुदाय के लिए शिक्षित करना। यूनेस्को के कार्यों के अंतर्गत उन्हीं कार्यों को प्राथमिकता दी गयी जो मानवता,

सद्भावना और शान्ति की स्थापना में सहयोग दे सकें।

शान्ति शिक्षा से संबंधित शैक्षिक प्रयास

शान्ति शिक्षा का बीजारोपण प्रारंभ में वेल्स के अंतर्राष्ट्रीय कॉलेज से प्रस्तावित किया गया। वहाँ इसके अध्ययन को आवश्यक मानते हुए, इसके पाठ्यक्रम के तीन रूप उपकल्पित किये गये। वे थे – (अ) शान्ति के विषय में शिक्षा (ब) शान्ति के लिए शिक्षा (स) सकारात्मक शान्ति। उपर्युक्त तीनों ही अवधारणाओं को शान्ति शिक्षा का आधार मानते हुए तत्संबंधी कार्यक्रम क्रियान्वित किये गये।

भारत में शान्ति शिक्षा की आवश्यकता का अनुभव करते हुए शिक्षा जगत में अनेक समुन्नत प्रयास किये गये। शिक्षा के क्षेत्र में समय-समय पर गठित विभिन्न आयोगों एवं समितियों जैसे – राधाकृष्णन आयोग (1948-49), मुदालियर आयोग (1952-53), श्री प्रकाश समिति (1959), सम्पूर्णानन्द आयोग (1961), कोठारी शिक्षा आयोग (1664-66), राममूर्ति समिति (1992) तथा चव्हाण समिति (1999) ने शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर मूल्य शिक्षा को प्रस्तावित करने की पहल की। यहाँ तक कि नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क (N.C.F.– 1975, 1988, 2000, 2005) में भी मूल्यों पर आधारित उपागमों को शिक्षा में एकीकृत करते हुए शान्ति शिक्षा पर ज़ोर दिया गया और यह स्पष्ट किया गया कि भले ही मूल्य शिक्षा के अंतर्गत शान्ति शिक्षा संबंधी तत्वों को देखा जाता है, किंतु यह उसका पर्याय नहीं है। शान्ति शिक्षा का क्षेत्र मूल्य शिक्षा से कहीं अधिक व्यापक है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में उल्लिखित है कि *"शान्ति शिक्षा के अंतर्गत ही समस्त मूल्यों को समाविष्ट किया जा सकता है, क्योंकि सभी मूल्यों के आदि व अन्त में अहिंसा और शान्ति का ही स्वरूप विद्यमान रहता है। शान्ति के लिए शिक्षा नैतिक विकास के साथ-साथ उन मूल्यों, दृष्टिकोणों और कौशलों के पोषण पर बल देती है, जो प्रकृति और मानव जगत के बीच सामंजस्य बनाये रखने के लिए आवश्यक हैं। इसमें जीने का हर्ष, प्रेम, उम्मीद और साहस के आंतरिक संसाधनों के साथ व्यक्तित्व का सम्मान शामिल है। सामाजिक न्याय शान्ति का महत्वपूर्ण घटक है.........।।"* (पृ.-70) अतएव यदि हम वैश्विक मूल्यों को आत्मसात करेंगे तो निसंदेह विश्व में शान्ति का वातावरण बन सकेगा। यह कहना कोई अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि शिक्षा के माध्यम से शान्ति स्थापित करने में अभीष्ट लक्ष्य की सम्प्राप्ति देखी जा सकेगी।

शान्ति शिक्षा के उद्देश्य

शान्ति शिक्षा की अवधारणा एवं अर्थ के परिप्रेक्ष्य में इसके अधोलिखित उद्देश्य निरूपित किये जा सकते हैं –

- छात्रों की मनोवृत्ति को परिमार्जित एवं परिनिष्ठित करते हुए, उनमें नैतिक मूल्यों का विकास करना, जिससे कि वे मूल्यों के प्रति आदर का भाव रखते हुए उन्हें व्यवहार में लाने की चेष्टा करें।
- उनमें विश्वव्यापी ज्ञान एवं विवेकपूर्ण चिंतन हेतु जिज्ञासा जाग्रत करना।
- उनमें भ्रातृत्व भाव के द्वारा राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करना, सरल शब्दों में उनमें 'मैं' के स्थान पर 'हम सब' की भावना

को विकसित करना तथा शान्तिप्रिय विचारों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण करना।

- उनमें ऐसी दृष्टि स्थापित करना जिससे वे हिंसा तथा संघर्ष की समस्त अभिव्यक्तियों को समझते हुए उनके दूरगामी परिणामों की विभीषिका से सचेत हो सकें।
- छात्रों को सद्-असद्, विवेक-अविवेकपूर्ण, न्याय-अन्यायपूर्ण कार्यों के प्रति जागरूक बनाना।

अध्यापक शिक्षा हेतु निहितार्थ

शान्ति शिक्षा के अंतर्गत निरूपित उद्देश्य निश्चित रूप से अध्यापक शिक्षा के लिए विशेष निहितार्थ रखते हैं। विश्व में व्याप्त मानवता रहित विनाशकारी प्रवृत्तियों की तीव्रगामी गति को देखते हुए अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि शान्ति शिक्षा का श्रीगणेश शिक्षक शिक्षा क्षेत्र से ही किया जाए और यह औचित्यपूर्ण भी होगा क्योंकि भावी शिक्षक ही आने वाली पीढ़ी का प्रेरणा स्त्रोत होता है। शिक्षक छात्रों में प्रारंभ से ही शान्ति, अहिंसा के मूल भावों को अंकुरित कर सकता है। शान्ति शिक्षा के कथित उद्देश्य उन मानवीय संबंधों की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं जिनकी आज के इस उपभोक्तावादी समाज में नितान्त कमी देखी जा रही है। इन मानवीय संबंधों को छात्रों में बीजारोपित करना शिक्षक का ही दायित्व बनता है और यह तभी संभव हो सकेगा जब प्रत्येक भावी शिक्षक संबंधों की गहराई को समझेगा, मनुष्य के साथ मनुष्य के सहयोग को बढ़ावा देगा, एक दूसरे की पीड़ा तथा उसके कष्ट को समझते हुए उसे अपनत्व का बोध करायेगा। शिक्षक ही छात्र को इस भावना का अहसास करा सकता है कि दूसरों को कष्ट देकर हम स्वयं भी कष्ट में रहते हैं।

इसी भावना को प्रसिद्ध विचारक जे. कृष्णमूर्ति अपने शब्दों में कहते हैं – *''शान्ति व सत्य की खोज के लिए निसंदेह हमारे अंदर के तथा पड़ोसियों के साथ होने वाली कलह से मुक्ति का होना आवश्यक है। जब हमारे अपने अंदर कलह नहीं होती तो हम बाहर भी कलह में नहीं होते। यह आन्तरिक कलह ही है जो बाहर प्रक्षिप्त होकर विश्व संघर्ष बन जाती है।''*

अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम में शान्ति शिक्षा के उद्देश्यों को क्रियान्वित करने के लिए पाठ्यक्रम पर सुविचारित ढंग से प्रयास किये जाने की आवश्यकता है, जिससे शान्ति शिक्षा के व्यावहारिक पहलुओं का अनुपालन करते हुए उद्देश्यों की सार्थकता तक पहुँचा जा सके। यह निर्विवादित सत्य है कि शिक्षा मनुष्य जीवन के समुन्नयन एवं रूपान्तरण की प्रणाली है। इस प्रणाली का संबंध छात्रों को बौद्धिक ऊँचाइयों तक पहुँचाना ही नहीं वरन् उनके आत्मज्ञान के विस्तार में भी सहायता करना है, जिससे कि वे एक अच्छा इंसान बन सकें, जीवन में आने वाली सभी प्रकार की मनोवैज्ञानिक बाधाओं का निवारण करने में सक्षम हो सकें। इस प्रकार के परिवर्तन का गुरूतर दायित्व शिक्षकों का है और यह तभी संभव होगा जब भावी शिक्षक स्वयं में परिवर्तन करेगा। श्री जे. कृष्णमूर्ति के भी इस संबंध में विचार थे कि –

''हमारे वर्तमान मानवीय संबंध ने विश्व में अकथनीय कष्ट उत्पन्न किया है और यदि उसमें हम एक मौलिक परिवर्तन का प्रयत्न करते हैं तो आत्मज्ञान के द्वारा स्वयं अपने में परिवर्तन करने

का कार्य तात्कालिक एवं सर्वाधिक महत्त्व का हो जाता है। अत: हम पुन: केंद्रीय विषय पर लौट आते हैं, जो कि हम स्वयं हैं, परंतु हम इसी बिंदु की वंचना करते हैं और अपनी ज़िम्मेदारी को सरकारों, धर्मों तथा विचार प्रणालियों पर डाल देते हैं। सरकार वही है, जो हम हैं (धर्म और विचार प्रणालियाँ हमारे अपने प्रक्षेपण मात्र हैं) और जब तक हम मौलिक रूप से नहीं बदलते तो न तो उचित शिक्षा संभव होगी न शान्तिपूर्ण विश्व।''

शान्ति शिक्षा की अवधारणा वास्तव में अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के एक महत्त्वपूर्ण मानक के रूप में है जिसकी मूल प्रेरणा संबंधों की दृढ़ता है। शिक्षा समाज रूपी व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है इस दृष्टि से शान्ति शिक्षा को भी एक सामाजिक अभ्यास कहा जा सकता है। आज हमारे शिक्षित कहलाने वाले समाज में भी चतुर्दिक सामाजिक-नैतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक मूल्यों में जो गिरावट दिखाई दे रही है उन सभी के निदान हेतु यह शिक्षा मरहम लगाने का कार्य कर सकती है। शान्ति शिक्षा की आवश्यकता को देखते हुए ही एन.सी.ई.आर.टी. के द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF–2005) में स्कूलों में शिक्षा को शान्ति के साथ जोड़ते हुए मूल्यपरक उपागम की बात कही गयी है, तथा भावी शिक्षकों की मनोवृत्ति, मूल्यों और कौशलों को विकसित करने की बात पर ज़ोर दिया गया है। यूनेस्को, यूनिसेफ जैसी संस्थाएँ भी इस दिशा में निरंतर प्रयत्नशील हैं। सन् 2005 में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा इससे संबंधित 6 सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यालयी शिक्षकों के लिए आयोजित (6 जून से 15 जुलाई) किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य था शिक्षकों को, बच्चों में शान्ति शिक्षा को विकसित करने एवं अभ्यास में लाने के योग्य बनाना। यह प्रशिक्षण अपनी सफलता को देखते हुए अब प्रतिवर्ष के एन.सी.ई.आर.टी. के कार्यक्रमों की सूची में शामिल कर लिया गया है। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में शान्ति शिक्षा के पाठ्यक्रम का समावेश भावी शिक्षकों के माध्यम से निश्चित रूप से वैश्विक मूल्यों को बढ़ावा देने तथा उन्हें आत्मसात करने में सहायक देखा जा सकेगा।

शान्ति शिक्षा को अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम में समाविष्ट करते समय यह भी विचारणीय हो जाता है कि शान्ति शिक्षा के पाठ्यक्रम को एक अलग विषय के रूप में रखा जाए अथवा उसे अन्य विषयों के साथ 'कॉमन कोर' (सामान्य केन्द्रिक) के रूप में सम्मिलित कर उसकी रूपरेखा बनायी जाए। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में पाठ्यक्रम की अधिकता को तथा अध्ययन विधि को देखते हुए यह कहना अधिक व्यवहार संगत होगा कि शान्ति शिक्षा संबंधी मूल तत्वों को विषयों के साथ सम्मिलित करते हुए पढ़ाया जाना चाहिए।

अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम में शान्ति शिक्षा का अन्तर्भाव औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों माध्यमों से किया जा सकता है। औपचारिक रूप से शान्ति शिक्षा को पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार करना समीचीन होगा तथा इसमें अनुदेशन भावी शिक्षकों की बौद्धिक क्षमता और परिपक्वता स्तर के अनुरूप बनाना युक्ति संगत होगा। ऐसे मूल्यपरक कार्यक्रमों को समाविष्ट करना औचित्यपूर्ण होगा, जो उनमें प्रारंभ से ही अहिंसा, प्रेम, सहिष्णुता, सहयोग, भाईचारे आदि भावों को विकसित करते हुए मानवीय संबंधों को

प्रगाढ़ बनाने में सहयोग दें, तथा ये भावी शिक्षक आगे चलकर अपने छात्रों के लिए प्रेरणा के स्त्रोत बनें। यह भी उल्लेखनीय है कि अनौपचारिक कार्यक्रमों के द्वारा भी अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में शान्ति शिक्षा को बढ़ावा दिया जा सकता है। विभिन्न सामुदायिक सेवा के कार्यक्रम, गाईडिंग, स्काउट, रेडक्रॉस, एन.एस.एस., समाज कार्य आदि सहगामी क्रियाओं के द्वारा शान्ति शिक्षा को विकसित किया जा सकता है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि शान्ति शिक्षा निश्चित रूप से मानव जाति की रक्षा और कल्याण में अपना सहयोग देगी। शान्ति शिक्षा के अभाव में ही मानव संवेदना अमानवीय रूप लेती जा रही है। ऐसी परिस्थितियों में हमारी प्रथम आवश्यकता इस गंभीर समस्या के मूल तक जाना है। विश्व में शान्ति और बन्धुत्व की भावना का विकास तभी हो सकेगा जब शान्ति शिक्षा के महत्व को शिक्षा जगत के प्रत्येक स्तर से जोड़ा जायेगा। शिक्षक, भावी शिक्षक तथा शिक्षा जगत से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को अपने दायित्व को पहचानते हुए मानवता को बचाने के लिए समर्पित भाव से आगे बढ़ना होगा। हमारे सम्मिलित प्रयास ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' एवं 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' के दर्शन को सही अर्थ में रूपान्तरित कर सकेंगे।

प्रसिद्ध विचारक जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार– *''छोटे-मोटे पैबन्द वाले सुधारों के द्वारा शान्ति नहीं उपलब्ध हो सकती, और न ही वह उपलब्ध हो सकती है पुराने विचारों तथा अंधविश्वासों की किसी नवीन व्यवस्था से। शान्ति तभी स्थापित हो सकती है जब हम समझें कि औपचारिकता से एवं छिछलेपन से परे क्या है और इस प्रकार विनाश के इस तूफान को रोकें जिसको हमारी अपनी आक्रामक वृत्ति ने तथा आशंकाओं ने उत्पन्न किया है। तभी हमारे बच्चों के लिए कोई आशा होगी और विश्व के लिए मुक्ति होगी।''*

संदर्भ

कृष्णमूर्ति, जे., 1979. *शिक्षा एवं जीवन का महत्व*, देव ज्योति प्रेस, वाराणसी.

पटेल, एम.एस. *एजुकेशनल फ़िलॉसफ़ी ऑफ़ गाँधी जी*, नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद.

पाण्डेय, के.पी. 2009. *'रिलेवन्स आर्फ स्वामी विवेकानन्द ऑइडियाज़ फॉर ह्यूमेन एक्सीलेन्स एंड माडर्न कॉन्सेप्ट ऑफ़ पेडागॉजी एंड एजुकेशन* (शिक्षक शिक्षा की भारतीय पत्रिका), अन्वेषिका, नयी दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा*, नयी दिल्ली.